49

घमण्ड का कोई कारण नहीं

(11:13-24)

रोमियों 11:13-24 में पौलुस विचार की अपनी मख्य रेखा से एक दिलचस्प और महत्वपूर्ण स्पष्ट रेखा बनाने के बाद प्रसंग से हट गया। अभी उसने कहा था कि यहूदियों को परमेश्वर के ठुकराने से अन्यजातियों के ग्रहण किए जाने का अवसर मिला (आयत 11)। कई अन्यजातियों ने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि परमेश्वर द्वारा यहूदियों को ठुकराने का *कारण* यह था *ताकि* वह अन्यजातियों को ग्रहण कर सके (देखें आयत 19)। सदियों तक परमेश्वर की विशेष जाति होने के कारण यहूदी लोग अपने आपको अन्यजातियों से श्रेष्ठ मानते थे। अब स्थिति बदल गई थी और अन्यजाति अब यह सोचने लगे थे कि वे यहूदियों से श्रेष्ठ हैं।

हमें नहीं मालूम कि पौलुस ने रोमियों के नाम की अपनी पत्री में इस विशेष समस्या की बात क्यों की। एक सम्भावना यह है कि पौलुस को रोम की कलीसिया में अन्यजातियों और यहूदियों के बीच फूट का पता चल गया था और वह इस स्थिति से निपटने के लिए लिख रहा था।[1] कुल मिलाकर रोम की कलीसिया की आत्मिक स्थिति अच्छी थी (देखें 1:8), परन्तु कलीसिया सम्पूर्ण नहीं थी; कहीं न कहीं सुधार की गुंजाइश रहती ही है। एक और सम्भावना यह है कि पूरे रोमी साम्राज्य में घूमने के बाद पौलुस ने यह समस्या अन्य मण्डलियों में पाई थी और उसने रोम की स्थिति को रोकने के लिए यह निर्देश जोड़ दिया। शायद पवित्र आत्मा को मालूम था कि हम सभी को दूसरों से श्रेष्ठ न समझने की सख्त चेतावनी की आवश्यकता है, जिस कारण पौलुस को ऐसी बातें कहने की प्रेरणा दी गई, जो हमारे लिए आज सम्भालकर रखी गई हैं।

इस वचन पाठ में पौलुस ने सबसे अधिक पाए जाने वाले पाप घमण्ड की बात की। घमण्ड को ''वह ज़मीन जिस पर अन्य सभी पाप बढ़ते हैं'' कहा जाता है।[2] सी. एस. लूइस ने घमण्ड को इस प्रकार स्पष्ट किया है:

> एक बुराई जिससे संसार का कोई व्यक्ति छूटा नहीं है; जिससे संसार का हर व्यक्ति परेशान है जब वह किसी दूसरे में इसे देखता है; और मसीही लोगों को छोड़, कोई भी व्यक्ति जिसकी कल्पना की जा सकती है अपने आपको इसका दोषी न पाए। मैंने लोगों को यह मानते सुना है कि वे चिड़चिड़े हैं, या वे अपना मुंह लड़कियों या शराब से मोड़ नहीं सकते, या यहां तक कि वे कायर हैं। मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को जो मसीही न हो अपने ऊपर यह दोष लगाते सुना हो। ... ऐसा कोई दोष नहीं है, जो व्यक्ति को इससे अधिक बदनाम करता हो और ऐसा कोई दोष नहीं है जिससे हम इससे अधिक अनजान हों। और जितना हमारे अन्दर यह होगा उतना ही हम दूसरों में इसे नापसंद करेंगे।[3]

अधिकतर लोग नीतिवचन 16:18 में KJV के शब्दों से परिचित हैं, ''विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है।''[4] हमने इसे छोटा करके ''घमण्डी का सिर नीचा''

कर दिया है। जब मैं इन शब्दों को सुनता हूं तो मुझे घमण्डी मेढक की कहानी का ध्यान आता है। मेढक ने दो बत्तखों को मित्र बना लिया। एक दिन वह तालाब जिसमें वे रहते थे सूख गया। बत्तखें तो नये तालाब में उड़कर जा सकती थीं, परन्तु उनके मित्र मेढक का क्या होगा? यह निर्णय लिया गया कि दोनों बत्तखें अपनी-अपनी चोंचों में एक डण्डा लेकर उड़ेंगी और मेढक अपने मुंह में उस डण्डे को लेकर उड़ेगा। जब वे उड़कर जा रहे थे तो एक किसान ने नज़र उठाकर उन्हें देखा। वह ज़ोर से चिल्लाया, ''कितनी समझदारी की बात है! पर यह विचार होगा किसका?'' मेढक ने कहा, ''मेरा।'' ... ''गिरने से पहले घमण्ड आता है।''

कभी न कभी हम में से हर किसी को घमण्ड की समस्या से जूझना पड़ता है। इस अध्ययन में हम केवल पौलुस के समय के अन्यजाति मसीही लोगों पर ही ध्यान न लगाएं, बल्कि अपने मनों की समीक्षा भी करें। वचन तो पहली शताब्दी के अन्यजाति मसीही लोगों की ही बात करेगा कि उन्हें घमण्ड करने का कोई कारण नहीं था। पर कारण हमारे पास भी नहीं है।

क्योंकि यहूदियों का ठुकराया जाना अन्तिम नहीं था (11:13-16)

एक व्यक्तिगत संदेश

हमारा वचन पाठ पौलुस की इस बात से आरम्भ होता है, ''मैं तुम अन्यजातियों से ये बातें कहता हूं'' (आयत 13क)। यहां से लेकर पाठ के अन्त तक उसकी टिप्पणियां विशेषकर अन्यजाति मसीही लोगों के लिए ही थीं।

पहले वह इन अन्यजातियों को बताना चाहता था कि उनके घमण्ड का कोई कारण नहीं था क्योंकि यहूदियों का ठुकराया जाना अन्तिम नहीं था। परमेश्वर आज भी यहूदियों की चिंता करता था और यदि वे अपने हठीपन से मन फिराकर यीशु में विश्वास कर लें तो वह उन्हें ग्रहण करने को तैयार था। पौलुस ने कहा, ''जब कि मैं अन्यजातियों के लिए प्रेरित हूं [देखें 1:1, 5; 15:16], तो मैं अपनी सेवा की बड़ाई करता हूं, ताकि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों में जलन उत्पन्न करवाकर उनमें से किसी एक का उद्धार कराऊं'' (आयत 13क, 14)। यूनानी शब्द (*doxazo*) के अनुसार ''बड़ाई करता हूं'' का मूल अर्थ ''महिमा करना'' है। पौलुस की मुख्य सेवकाई अन्यजातियों के लिए थी, परन्तु उसकी गहरी चिंता अपने साथी देशवासियों के लिए थी (9:1-3; 10:1) और जब यहूदियों का भी मन परिवर्तन होता था तो वह अपनी सेवकाई को ''महिमा प्राप्त'' मानता था।

13 और 14 आयतों में पौलुस ने फिर से यह आशा व्यक्त की, जब यहूदी लोग अन्यजातियों को मसीहा के राज्य के लाभों का आनन्द लेते देखेंगे, तो वे उन्हें आशिषों को पाने के लिए ''जलन'' (*तीव्र* इच्छा) से भर जाएंगे और वे यीशु में विश्वास करने लगेंगे।[5] उसने सभी यहूदियों के मन परिवर्तन की कल्पना नहीं की, परन्तु ''कई एक का उद्धार'' की आशा अवश्य की[6] (1 कुरिन्थियों 9:20, 22 से तुलना करें)।

उसने आगे कहा, ''क्योंकि जब कि उन [यहूदियों] का त्याग दिया जाना [परमेश्वर द्वारा] [अन्यजाति] जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उन [यहूदियों] का [परमेश्वर द्वारा] ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा?'' (रोमियों 11:15)। 14 और 15

आयतों में फिर से हमें ''क्या परमेश्वर पापियों को त्याग देता है (11:1-12)'' पाठ में बताई गई घटनाओं का क्रम मिलता है। जब यहूदियों ने सुसमाचार को ठुकरा दिया तो परमेश्वर द्वारा उन्हें ठुकरा दिया गया। इससे अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने का अवसर मिला, जो अन्यजातियों के मिलाप (उद्धार) का कारण बना, जिन्होंने सुसमाचार को मान लिया (आयत 15)। पौलुस को आशा थी कि जिन यहूदियों ने अन्यजातियों को परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने को देखा वे भी उद्धार पाना चाहते होंगे (आयत 14)।

यहूदियों का ठुकराया जाना (परमेश्वर द्वारा)

↓

अन्यजातियों का ग्रहण किया जाना (परमेश्वर द्वारा)

↓

यहूदियों का ग्रहण किया जाना (परमेश्वर द्वारा)

पौलुस ने कहा कि यदि ऐसा हुआ, ''तो क्या उनका ग्रहण किया जाना [परमेश्वर द्वारा] मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा[7] ?'' (आयत 15ख)। पौलुस ने ''मरे हुओं में से जी उठने'' शब्दों का इस्तेमाल यहूदियों के उद्धार पाने के एक प्रभावशाली रूपक के रूप में किया (आयत 14)। उसके मन में शारीरिक पुनरुत्थान के बजाय आत्मिक पुनरुत्थान की बात थी (देखें रोमियों 6:4, 5)। मुझे उड़ाऊ पुत्र के पिता का ध्यान आता है, जिसने अपने पुत्र के लौटने पर कहा, ''क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है'' (लूका 15:24क)।

कुछ लोग अध्याय 11 की व्याख्या मसीह की वापसी से तुरन्त पहले की घटनाओं पर ज़ोर देने के लिए करते हैं। वे निष्कर्ष निकालते हैं कि आयत 15 में से मरे हुओं में से जी उठने की बात ''यीशु की वापसी के समय सारी मनुष्यजाति के शारीरिक पुनरुत्थान की बात है, परन्तु लियोन मोरेस ने लिखा है कि यहां पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द सामान्य पुनरुत्थान के लिए और कहीं इस्तेमाल नहीं हुए हैं।''[8] वाल्टर डब्ल्यू वैल्सरे ने टिप्पणी की है कि ''संदर्भ शारीरिक पुनरुथान का कोई सुझाव नहीं देता।''[9] विलियम हैंड्रिक्सन ने रोमियों 11:15 के पहले और बाद की आयतों के विषय पर ध्यान दिलाया है और निष्कर्ष निकाला, ''इसलिए यह 'उनका ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने' के लिए बीच के हवाले की व्याख्या उस हवाले के रूप में करना नहीं होगा जिससे संसार के इतिहास के अन्त में कुछ होने की उम्मीद की जाती है।''[10]

पौलुस संसार के अन्त की नहीं, बल्कि अपने समय की घटनाओं की बात कर रहा था। साथी यहूदियों के उद्धार पर विचार करते हुए जो सबसे उपयुक्त अलंकार उसके मन में आया वह ''मरे हुओं में से जी उठने'' का था। ऐसे ही एक रूपक के लिए, इस्राएल की बहाली के सम्बन्ध में यहेजकेल का स्पष्ट रूपक देखें (यहेजकेल 37:1-14)।

आयत 16 में आगे बढ़ने से पहले, 12 और 15 आयतों की तुलना करना उपयोगी हो सकता है। आयत 12 कहती है, ''इसलिए यदि उन [यहूदियों] का गिरना जगत के लिए धन और उनकी घटी अन्यजातियों के लिए सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उनकी भरपूरी से क्या कुछ न होगा!''

आयत 15 में है, ''क्योंकि जबकि उन [यहूदियों] का त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उनका ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा?'' आयत 12 उसके बारे में है, जो यहूदियों ने किया था, जबकि आयत 15 उनके परिणामों के बारे में है जो उन्होंने किया था। अब दोनों आयतों को मिलाते हैं: हम देखते हैं कि यहूदियों का गिरना और घटी (आयत 12) परमेश्वर द्वारा उनको ठुकराने का कारण बनी (आयत 15), जबकि उनकी ''भरपूरी'' (आयत 12) परमेश्वर द्वारा उन्हें ग्रहण करने का कारण बनी (आयत 15)। जैसा कि 11:12 की चर्चा में हमने देखा था कि उस संदर्भ में ''भरपूरी'' शब्द का सम्बन्ध उनके परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने से जुड़ा है। इसका काल्पनिक ''पूर्ण अंक'' से कोई सम्बन्ध नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सुझाव देते हैं।[11]

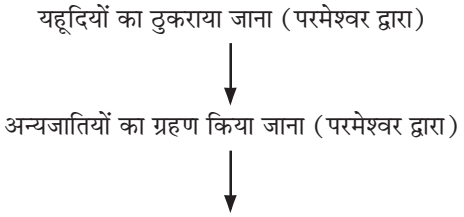

प्रेरणा देने वाले रूपक

आयत 16 में पौलुस ने दो रूपकों का इस्तेमाल किया, जिनका सम्बन्ध यहूदियों के परमेश्वर की ओर वापस मुड़ने का था। पहले उसने एक औपचारिक उदाहरण का इस्तेमाल किया: ''जब भेंट का पहिला पेड़ा[12] पवित्र ठहरा, तो पूरा गूंथा हुआ आटा भी पवित्र है'' (आयत 16क)। NIV में ''यदि गूंथे हुए आटे के भाग का पहला फल पवित्र है, तो पूरा आटा पवित्र है।'' पुराने नियम में अनाज के पहले फल से बनाया गया गुंधे हुए आटे का भाग प्रभु को भेंट किया जाता था (देखें गिनती 15:17-21)। इस कार्य से पूरा आटा पवित्र हो जाता था, ताकि इसे भेंट करने वाले द्वारा इस्तेमाल किया जा सके। यदि रोमियों 11:16 में पौलुस के दोनों रूपक समानांतर हैं और ''पहला पेड़ा'' और ''जड़'' एक ही हैं तो ''पहला पेड़ा'' सम्भवतया यहूदी पुरखाओं, विशेषकर अब्राहम को कहा गया है। क्योंकि पुरखे पवित्र थे, परमेश्वर ने उनकी ''असली'' संतानों (जिन्होंने विश्वास के उनके उदाहरण का अनुसरण किया) को भी पवित्र माना।

फिर पौलुस ने खेती का एक उदाहरण इस्तेमाल किया: ''और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियां भी ऐसी ही हैं'' (आयत 16ख)। इस पर कुछ असहमति है कि वह ''जड़'' क्या (या कौन) है। कई लोग कहते हैं कि जड़ स्वयं परमेश्वर है। अन्यों का मानना है कि यह छुटकारे की परमेश्वर की योजना है। इस पूरे रूपक को मानते हुए (आयत 16क-24) ''जड़'' को ''बाप-दादाओं [पुरखाओं]'' के रूप में समझना बेहतर हो सकता है (देखें आयत 28)-विशेषकर अब्राहम, जिसे आरम्भ में परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं दी गई थीं। निश्चय ही उल्लेखित पसंदों में कोई बड़ा विवाद नहीं है: *परमेश्वर की छुटकारे की योजना* तब बताई गई थी जब *परमेश्वर* ने *अब्राहम* को और अन्य पुरखाओं को बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दीं। यदि पौलुस के मन में मुख्यतया

अब्राहम ही था, तो आयत 16 के अन्तिम भाग का अर्थ कुछ इस प्रकार है: ''और जब जड़ [अब्राहम] पवित्र ठहरी, तो डालियां [जो 'पिता अब्राहाम ... के विश्वास के कदमों में चलते हैं' (4:12)] भी ऐसी ही हैं।''

13 से 16 आयतों में पौलुस ने उस सच्चाई पर ज़ोर देना जारी रखा जिस के साथ उसने पिछला भाग समाप्त किया था कि यहूदियों का ठुकराया जाना अन्तिम नहीं था। उद्धार का द्वार यहूदियों के लिए अभी भी खुला था, जिस कारण अन्यजातियों के लिए जो उस द्वार के बीच में से होकर आए थे अपने आपको बेहतर समझने का कोई आधार नहीं था।

क्योंकि अन्यजातियों का ग्रहण किया जाना उनकी योग्यता के अनुसार नहीं था (11:17, 18)

दूसरा कारण कि अन्यजातियों को घमण्ड करने का कोई कारण नहीं था यह था कि वे उसके योग्य नहीं थे, जो परमेश्वर ने उनके लिए किया था; उनका ग्रहण किया जाना केवल अनुग्रह के आधार पर था। पौलुस ने आम तौर पर इस सच्चाई की घोषणा की थी (उदाहरण के लिए, 3:24 में), परन्तु इस बार उसने इस विषय पर एक असामान्य ढंग इस्तेमाल किया, ऐसा असामान्य ढंग जिसकी उम्मीद नहीं थी।

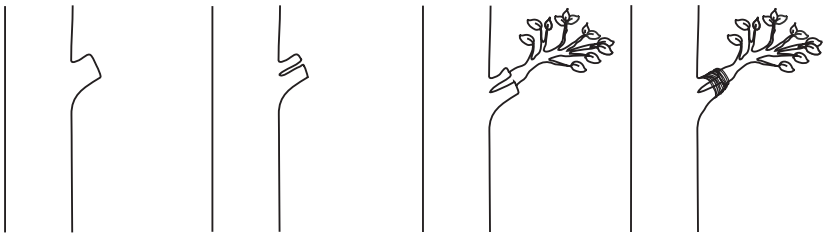

1. काटी गई डाली 2. चीरा गया ठूंठ 3. लगाई गई डाली 4. बांधी गई

एकरूपता

आयत 16 में ''जड़'' और ''डालियां'' के पौलुस के हवाले से उसे जैतून के पेड़ में साटी गई डालियों को विस्तृत एकरूपता[13] का इस्तेमाल करना पड़ा। उसने आरम्भ किया, ''और यदि कोई एक डाली तोड़ दी गई, और तू जंगली जलपाई होकर उन में साटा गया, और जलपाई की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है'' (11:17)। पौलुस के पाठक जैतून के पेड़ों से परिचित थे, पर हम में से अधिकतर लोगों को मालूम नहीं है। उसके उदाहरण को समझने के लिए, हमें जैतून के पेड़ों और साटे जाने के बारे में कुछ जानकारी होना आवश्यक है। जैतून के पेड़ों के हरे-हरे पत्ते भूमध्य सागर के आस-पास सब जगह देखे जा सकते हैं। जैतून खाना बनाने, दवाइयों के लाभ तथा अन्य उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल होने वाले तेल का मुख्य स्रोत था। जंगली जैतून के पेड़ उगाए गए जैतून के पेड़ों से कठोर होते थे। परन्तु उगाए गए पेड़ों से अधिक और बहुत से जैतून होते थे।

साटना दो अलग-अलग तरह के पौधों को जोड़ने की प्रक्रिया है। एक विशेष ढंग से शाखा को पेड़ से काट दिया जाता है, जिससे कुछ इंच लम्बा चीरा लग जाता है। वह चीरा ठूंठ बन जाता है। फिर किसी और पेड़ की छोटी सी टहनी काटी जाती है और उस टहनी के कटे हुए सिरे को उस

चीरे के आकार में बनाया जाता है। इसे पहले वाले पेड़ के चीरे गए ठूंठ में लगा दिया जाता है और जोड़ कसकर बांध दिया जाता है ताकि पेड़ और उसमें लगाई गई टहनी इकट्ठे बढ़ सकें। साटने से हमेशा टहनी हरी ही रहना आवश्यक नहीं है; परन्तु सही ढंग से लगाई जाए तो आमतौर पर यह सफल हो जाती है।

जैतून के पेड़ों के सम्बन्ध में उगाए गए पेड़ों की टहनियां जंगली पेड़ों पर लगाना आम बात थी जिससे उन टहनियों में जंगली पेड़ की सामर्थ के लाभ मिल सकें। जंगली पेड़ की टहनी से उगाए गए जैतून के पेड़ पर टहनी लगाना बहुत कम होता था।[14] तौभी यह ढंग पौलुस के उद्देश्य के लिए बहुत उपयुक्त था, सो उसने ऐसी प्रक्रिया के बारे में लिखा (उसके वाक्यांश का इस्तेमाल करें) तो जो ''स्वभाव के विरुद्ध है'' (आयत 24)।

वचन में से देखने के अपने ढंग पर काम करते हुए, मन में उगाए गए जैतून के एक पेड़ की कल्पना करें। पेड़ परमेश्वर के लोगों को दर्शाता है। विशेषकर यह इस्राएलियों को दर्शाता है जो परमेश्वर के विशेष लोग थे। पुराने नियम में जैतून का पेड़ इस्राएल का प्रतीक था (देखे यिर्मयाह 11:16, 17; होशे 14:4-6)। परमेश्वर ने इस्राएल को ''लगाया'' था, संसार में मसीहा को लाने की अपनी योजना पर काम करते हुए उस जाति पर विशेष ध्यान दिया था।

रोमियों 11:17 का आरम्भ होता है, ''यदि कोई एक डाली तोड़ दी गई'' (आयत 17क)। तोड़ी गई डालियां यहूदी लोग थे जो ''अविश्वास के कारण तोड़ी गई'' थी (आयत 20)। ''कोई'' एक विशेष अल्पवक्तव्य है क्योंकि *अधिकतर* यहूदी ''डालियां'' यीशु में विश्वास करने से अपने इनकार के कारण तोड़ डाली गई थीं।

आयत 17 जारी रहती है, ''और तू जंगली जलपाई होकर उन में साटा गया'' (आयत 17ख)। ''तू'' अन्यजाति मसीहियों को कहा गया (आयत 13)। उनके स्रोत को ''जंगली जैतून का पेड़'' कहा गया है (आयत 24) क्योंकि पुराने नियम में अन्यजातियों पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना यहूदियों पर दिया गया था। परन्तु अब अन्यजातियों को परमेश्वर की अन्तिम योजनाओं तथा उद्देश्यों में भाग का अवसर दिया गया था। अन्यजाति लोग जिन्होंने यीशु और उसके मार्ग को मान लिया था उन्हें उन यहूदियों ''के बीच में साटा गया'' था, जिन्होंने विश्वास किया था।

आयत 17 समाप्त होती है, ''और जलपाई की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है [विश्वास करने वाले यहूदियों]'' (आयत 17ग)। आयत 16 की तरह ''जड़'' पुरखाओं को माना जा सकता है, विशेषकर अब्राहम को जिसे परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं दी गई थीं। यूनानी धर्मशास्त्र में ''जड़ की चिकनाई'' है (देखें KJV)। यह हवाला ''पौष्टिक शक्ति'' के हवाले से है (NIV) जो जड़ में से तने तक जाती है और फिर डालियों में पहुंचती है।

प्रासंगिकता

पौलुस प्रासंगिकता बनाने को तैयार था। उसने अपने अन्यजाति पाठकों को बताया, ''डालियों पर घमण्ड न करना'' (आयत 18क)। ''घमण्ड करना'' *katakauchaomai* (*kauchaomai,* का अर्थ *kata* से शक्ति पाकर ''शेखी मारना'') से लिया गया है। KJV ''के विरुद्ध शेखी न मारना'' है। ''डालियों'' का अर्थ केवल वे यहूदी हो सकता है, जो ''अविश्वास के कारण तोड़ी

गई'' थीं (आयत 20), परन्तु यह हवाला सम्भवतया, ''स्वाभाविक डालियां'' (आयत 21) अर्थात यहूदी मसीही था जो अभी भी ''पेड़ में'' थीं, सहित सामान्य अर्थ में यहूदियों के लिए है। जैसा कि परिचय में बताया गया था, यहूदी लोग कालांतर में अन्यजातियों के प्रति घमण्डी थे; परन्तु अब स्थिति पलट गई थी। किसी घमण्डी अन्यजाति को यहूदी से यह कहने की कल्पना करना आसान है, ''परमेश्वर ने तुम्हें ठुकरा दिया है और हमें ग्रहण कर लिया है!''

पौलुस ने अपनी बात जारी रखते हुए अन्यजाति घमण्ड को पंक्चर कर दिया, ''और यदि तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है'' (आयत 18ख)। शक्ति टहनियों से जड़ तक नहीं पहुंचती थी, बल्कि जड़ से टहनियों तक पहुंचती थी। एक अर्थ में पौलुस ने अन्यजाति मसीहियों से कहा, ''यहूदियों को तुम्हारे अतीत से किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं हो रहा है। इसके बजाय तुम्हें बहुत पहले यहूदियों के पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञाओं का लाभ मिल रहा है।'' अन्यजाति मसीहियों को यह समझने की आवश्यकता थी कि आत्मिक आशिषें जिनका आनन्द वे ले रहे थे यहूदी मिट्टी से निकली थीं। यीशु ने सामरी स्त्री से कहा था कि ''उद्धार यहूदियों में से है'' (यूहन्ना 4:22)।

रोमियों की पुस्तक का यह भाग लिखते हुए पौलुस ने अपने अन्यजाति पाठकों को दीन करना चाहा। जिन आशिषों का आनन्द वे ले रहे थे वे उनके योग्य नहीं थे और उन्हें कमाया नहीं गया था। *अनुग्रह* के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें ''साटा'' था और उन्हें यहूदी जाति के द्वारा बनाई गई अपनी योजनाओं और उद्देश्यों का भाग बनाया था। अन्यजाति मसीही लोगों के पास घमण्ड करने का कोई कारण नहीं था।

क्योंकि अन्यजातियों का ग्रहण किया जाना अनिवार्य नहीं था (11:19-22)

एक शिकायत (आयतें 19, 20क)

पौलुस ने अन्यजाति मसीही लोगों की ओर से की जाने वाली आपत्ति का अनुमान लगाया: ''फिर तू कहेगा कि [*ina*, ''ताकि''] डालियां इसलिए तोड़ी गई कि मैं साटा जाऊं'' (आयत 19)। इस आपत्ति के शब्दों से संकेत मिलता है कि कुछ अन्यजातियों का विचार था कि यहूदियों के ''काटे जाने'' का *कारण* अन्यजातियों के लिए *रास्ता बनाना* था। यह सच नहीं था। यहूदी लोगों को विश्वास न कर पाने के कारण काटा गया था (आयत 20)। यदि हर यहूदी विश्वास कर भी लेता तौभी अन्यजातियों के विश्वास के लिए ''पेड़'' में जगह होनी थी।

ऐसा होने के कारण हमें आयत 20 में पौलुस के नकारात्मक उत्तर की उम्मीद होती, न कि सकारात्मक। परन्तु आयत का आरम्भ *kalos* से होता है, जिसका अर्थ मुख्यतया ''अच्छा'' या ''भला'' है (देखें KJV)। NASB में *kalos* का अनुवाद ''बिल्कुल सही'' के रूप में करके उसके बाद ''वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गईं, परन्तु तू अपने विश्वास से बना रहता है'' (आयत 20क)। यदि हम NASB के शब्दों का इस्तेमाल करें, तो हम पौलुस को ''बिल्कुल सही'' विडम्बना के स्पर्श से कहते हुए देख सकते हैं।[15] शायद वह पिछले वाक्य के एकमात्र *भाग* अर्थात इस तथ्य से सहमत था कि यहूदी लोगों को तोड़ा गया और अन्यजातियों को साटा गया था। इससे

आयत 20 का पहला भाग कुछ इस प्रकार पढ़ा जाएगा: ''यह सच है कि डालियां तोड़ी गईं, परन्तु यह *इसलिए* नहीं कि तुम्हें साटा जा सके बल्कि उन्हें इसलिए तोड़ा गया क्योंकि उन्होंने *विश्वास* नहीं किया'' (देखें SEB)।

यहूदियों को उनके ''अविश्वास के कारण तोड़ा गया'' था, परन्तु अन्यजातियां अपने ''विश्वास के कारण'' बनी हुई थीं। मुख्य कारण विश्वास ही था। उनके विश्वास के कारण अन्यजातियों को उगाए गए जैतून के पेड़ में लगाया गया था और अब वे पेड़ का भाग बनी रही (''खड़े रहे'') क्योंकि वे विश्वास में बने रहे। NEB में ''विश्वास से तुम अपनी जगह पर बने हुए थे'' है।

सावधानी (आयतें 20ख-22)

यह हमें अपने पाठ के विषय में वापस ले आता है। पौलुस ने कहा, ''इसलिए अभिमानी न हो, परन्तु भय मान'' (आयत 20ख)। यूनानी भाषा में ''ऊंची बातों का ध्यान न कर'' है। (*Hupselos* का इस्तेमाल उसके लिए हुआ है जो ''ऊंचा'' या ''बहुत ऊंचा'' है[16]; KJV.) अगले अध्याय में पौलुस ने सब मसीही लोगों की ताड़ना की, ''मैं तुम में से हर एक से कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर[17] कोई भी अपने आप को न समझे'' (12:3)। यहां जोर की गई भाषा में पौलुस ने एक अर्थ में अपने अन्यजाति पाठकों से कहा, ''अभिमान न करो, बल्कि डरो'' (11:20)।

''भय'' (*phobeo* से) का अर्थ गतिहीन कर देने वाला भय नहीं, बल्कि अविश्वास के मज़बूत, स्वास्थ्य भर है।[18] पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वभाविक डालियां [यहूदियों को] न छोड़ी, तो तुझे [अन्यजातियों को] भी न छोड़ेगा'' (आयत 21)। परमेश्वर ने यहूदियों को इसलिए ''तोड़ा'' क्योंकि उन्होंने विश्वास नहीं किया। यदि ऐसा है तो वह ''अन्यजातियों को तोड़ने'' से हिचकेगा नहीं यदि वे अपने विश्वास में बने नहीं रहते।

अगली आयत परमेश्वर के स्वभाव के दो पक्षों के श्रेष्ठ विवरण से आरम्भ होती है: ''इसलिए परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख''[19] (आयत 22क)। वैसल ने लिखा है, ''परमेश्वर की किसी भी पर्याप्त शिक्षा में ये दोनों तत्व होने आवश्यक हैं। जब हम उसकी दयालुता की उपेक्षा करते हैं, तो परमेश्वर एक निर्दयी तानाशाह लगता है; जब हम उसकी कठोरता की उपेक्षा करते हैं तो वह लट्टू हुआ पिता लगता है।''[20]

पौलुस ने कहा, ''इसलिए परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख जो मारे गए [अविश्वासी यहूदी] उस पर कड़ाई, परन्तु तुझ [विश्वास करने वाले अन्यजाति] पर कृपा'' (आयत 22क, ख)। फिर उसने इन गम्भीर शब्दों को जोड़ा: ''*यदि* तू उसमें बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा'' (आयत 22ग)। ''उसकी कृपा में बना रह'' का अर्थ विश्वासी बने रहना है ताकि वे परमेश्वर की दयालुता से मिलने वाली आशिषों का आनन्द लेते रह सकें। (आम की तरह, ''विश्वास'' एक व्यापक शब्द है जिसमें मन से आज्ञा मानना शामिल है [रोमियों 6:17; देखें 1:5; 16:26]।)

डगलस जे. मू ने लिखा है कि वे आयतें जिन पर हम विचार करते आ रहे हैं ''उस विश्वास में बने रहने की सबसे गम्भीर चेतावनी देती हैं, जो हमें नये नियम में मिलती हैं।''[21] अन्यजाति मसीही लोगों के लिए घमण्ड करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि परमेश्वर द्वारा उन्हें ग्रहण किया

जाना अनिवार्य नहीं है। यदि वे ''[परमेश्वर की] कृपा में बने'' नहीं रहते तो वे अविश्वासी यहूदियों की तरह ही ''काट डाले'' जाने थे। पीटरसन ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''जैसे आप सूखी लकड़ी बनते हैं आपको बाहर निकाल दिया जाता है'' (MSG)।

क्योंकि यहूदियों का ग्रहण किया जाना अभी भी सम्भव था (11:23, 24)

मानवीय क्षमता

जहां तक परमेश्वर के अनुग्रह की बात थी, यहूदी लोग पुराने नियम के समयों में ''अन्दर'' थे। और अधिकतर अन्यजाति ''बाहर'' थे (देखें इफिसियों 2:12)। रोमियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय कई अन्यजाति ''अन्दर'' थे और अधिकतर यहूदी ''बाहर'' थे। परन्तु यह स्थिति फिर से बदल सकती थी। यह कहने के बाद कि अन्यजाति मसीही ''काट डाले'' जा सकते हैं, पौलुस ने कहा, ''और वे [यहूदी] भी यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएंगे'' (आयत 23क)। परमेश्वर ने यहूदियों के लिए दरवाजा ज़ोर से बंद करके ताला नहीं लगाया था कि वे फिर कभी अन्दर न आ सकें।[22]

आयत 23 में ''यदि'' शब्द को रेखांकित कर लें। पौलुस ने यह नहीं कहा कि ''*जब* वे अपने विश्वास में बने नहीं रहते'' बल्कि यह कहा कि ''*यदि* वे अविश्वास में न रहें।'' हैंड्रिक्सन ने टिप्पणी की थी कि ''प्रेरित ने यह नहीं कहा या संकेत दिया कि एक दिन अविश्वासी यहूदियों को उनके अपने जैतून के पेड़ में साटा जाएगा अर्थात उनका उद्धार हो जाएगा।''[23] आयत 26 का अध्ययन करने पर हम देखेंगे कि उस आयत में आयत 23 की स्पष्ट शिक्षा का कोई विरोध नहीं है। हम में से हर किसी की तरह, यहूदी लोग भी स्वतन्त्र नैतिक जीव हैं और उन्हें विश्वास करने या न करने की छूट है।

''विश्वास त्याग की असम्भावना'' की शिक्षा का दावा करने वाले कई बार यह सिखाने वालों को कि परमेश्वर की संतान पाप करके गिर सकती है, चुनौती देते हैं। वे मज़ाक उड़ाते हुए कहते हैं, ''क्या तुम यह कह रहे हो कि कोई *विश्वासी* खो सकता है?'' इन्हें ध्यान से इस बात पर विचार करना चाहिए कि इन आयतों में जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं पौलुस ने क्या कहा। प्रेरित ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी अविश्वासी के लिए विश्वासी बनना और उद्धार पाना सम्भव है (आयत 23) और यह भी कि विश्वासी के लिए अविश्वासी होकर नाश होना सम्भव है (आयतें 20–22)।

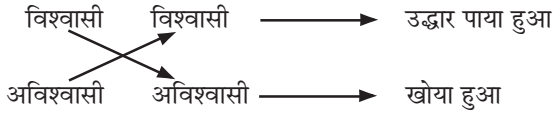

जैसा कि मैंने पहले कहा था, मसीही बनने के बाद भी हमें अपनी मर्ज़ी चुनने की अज़ादी होती है। हम ''परमेश्वर की कृपा में बने'' रह सकते हैं या हम उसके बताए हुए ढंग के अनुसार न जीने का निर्णय ले सकते हैं। यह घमण्ड के हमारे विषय से कैसे जुड़ा है? एफ़. एफ़. ब्रूस ने

टिप्पणी की है कि घमण्डी मन हमें ईश्वरीय अनुग्रह पर भरोसा रखना भुलाकर परमेश्वर में विश्वास की जगह अपने ऊपर भरोसा रखना सिखा सकता है। यदि ऐसा होता है, तो हमें भी ''काट डाला''[24] जा सकता है। पौलुस ने हम में से हर किसी को चुनौती दी है, ''अपने आपको परखो कि विश्वास में हो या नहीं। अपने आपको जांचो!'' (2 कुरिन्थियों 13:5क)।

ईश्वरीय सामर्थ

यह कहने के बाद कि परमेश्वर यहूदियों को फिर से साट देगा ''यदि वे अपने अविश्वास में बने न रहें,'' पौलुस ने आगे कहा,

> ... क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता है। क्योंकि यदि तू उस जलपाई से जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छी जलपाई में साटा गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं, अपने ही जलपाई में साटे क्यों न जाएंगी? (रोमियों 11:23ख, 24)।

तर्क हमें बताता है कि ''बाहरी'' डालियों (अन्यजातियों) में साटे जाने के बजाय ''स्वाभाविक'' डालियों (यहूदियों) में साटा जाना आसान होगा।

कई लेखक वचन में इस बात पर क्रोधित हो जाते हैं। वे आपत्ति करते हैं कि माली फल न देने वाली टहनी को काटेगा नहीं (देखें यूहन्ना 15:2)। और बाद में इसे फिर से साटने का प्रयास करते हैं। वे यह भी कहते हैं कि तने से टूटी टहनी तुरन्त सूख जाती है और केवल आग में डाले जाने के काम आती है (देखें यूहन्ना 15:6) यानी इसे फिर से साटना (कलम लगाना) *असम्भव* होता है। वे पौलुस को एक शहरी लड़के के रूप में देखते हैं जिसने खेतीबाड़ी के बारे में अपनी अज्ञानता को दिखाया। इन लोगों से, पहले तो मैं यह कहूंगा, ''इतने उत्तेजित न हों'' आखिर यह केवल एक *उदाहरण* है। पौलुस का उद्देश्य ईश्वरीय सच्चाइयां बताना था न कि खेतीबाड़ी पर भाषण देना। यीशु ने एक बार एक स्वामी के बारे में बताया जिसने एक दास को लाखों डॉलर कर्ज़ माफ़ कर दिया था (मत्ती 18:23-27), जो एक नामुमकिन सी बात लगती है! क्या इसका अर्थ यह है कि यीशु अपने समय के स्वामी/दास के सम्बन्ध से अनजान था? नहीं यह केवल एक *उदाहरण* था।

दूसरा, वचन यह नहीं कहता कि ''*मनुष्य* उन्हें फिर से साटने के योग्य है'' बल्कि यह कहता है कि ''*परमेश्वर* उन्हें फिर से साटने के योग्य है।'' मत्ती 19:26 के ये शब्द उपयुक्त प्रतीत होते हैं: ''मनुष्य से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।'' क्योंकि प्रभु मुर्दों को जिला सकता है (रोमियों 11:15), निश्चय ही वह फिर से साटे जाने के लिए सुखी हुई टहनी को हरी कर सकता है।

क्या अन्यजाति मसीही लोगों के पास यहूदियों के प्रति अक्खड़ होने का कोई कारण था क्योंकि उन्हें ग्रहण कर लिया गया था जबकि अधिकतर यहूदियों को नकार दिया गया था? नहीं क्योंकि यह स्थिति आसानी से फिर से पलट सकती थी। यहूदियों का ग्रहण किया जाना अभी भी सम्भव था, यदि वे अपने अविश्वास से मुड़ आते।

सारांश

इस पाठ में हमने ज़ोर दिया है कि अन्यजातियों के लिए घमण्ड करने का कोई कारण नहीं है। इसलिए हमारे पास घमण्ड करने का कोई कारण नहीं है। हम सभी पापी हैं जो केवल मरने के योग्य हैं (रोमियों 3:23; 6:23)। हमें परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार मिला है न कि हमारी अपनी किसी खूबी के कारण। आइज़क वार्ट ने लिखा है:

> जब रखता हूं मैं क्रूस पर ध्यान
> जहां मसीह ने मौत सही,
> ना चीज़ मैं गिनता माल ओ जान
> और खुदपरस्ती[25] सब।

पतरस ने लिखा, ''परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए'' (1 पतरस 5:5, 6)।

अन्त में मैं उन्हें विशेष संदेश देना चाहता हूं, जिनका परमेश्वर के साथ सम्बन्ध सही नहीं है। यदि आपने अपना जीवन कभी परमेश्वर को नहीं दिया है, तो आपको अपने पापों से मन फिराकर और प्रभु की आज्ञाओं के प्रति अपने आपको अधीन करना कठिन लग सकता है (प्रेरितों 17:30; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप भटके हुए मसीही हैं, तो आपके लिए अपने पापों को मानना, मन फिराना और दूसरों से अपने लिए प्रार्थना करने को कहना कठिन हो सकता है (1 यूहन्ना 1:9; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)। मेरी आपसे विनती है कि अपने घमण्ड को अपने आपको स्वर्ग से बाहर न रखने दें!

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

निम्न शीर्षकों सहित इस पाठ के कई वैकल्पिक शीर्षक हो सकते हैं: ''घमण्ड की समस्या'' ''घमण्ड के खतरे,'' ''घमण्ड से सावधान'' और ''शेखी मारने का कोई कारण नहीं।''

पौलुस का जैतून के वृक्ष का उदाहरण ज़बर्दस्त। यदि आपके पास बोर्ड है और आप थोड़ी बहुत ड्राइंग जानते हैं, तो भूमि में गहरी जड़ों वाले पेड़ का एक रेखाचित्र बनाएं, जिसकी कई टहनियां हैं। पाठ में आगे चलकर आप कुछ टहनियों को मिटाकर उन्हें फिर से बना सकते हैं, उन्हें भूमि पर पड़े दिखाने के लिए। फिर आप पेड़ में साटी गई नई टहनियां बना सकते हैं।

घमण्ड की समस्या पर बात करते हुए इस पाठ पर अधिक समय बिताएं। यदि आपके पास अनुक्रमणिका है, तो उसमें ''घमण्ड,'' ''अहंकार'' और ''अभिमान'' तथा अन्य मेल खाते हुए शब्द देखें। आरम्भ करने के लिए कुछ आयतें इस प्रकार हैं: 1 कुरिन्थियों 13:4; 1 तीमुथियुस 3:6; 2 तिमुथियुस 3:2; 1 यूहन्ना 2:16.

शायद यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पापपूर्ण घमण्ड होता है और न्यायसंगत घमण्ड होता

है। हमारे वचन पाठ में आयत 13 में ''बढ़ाई'' (*doxazo*) शब्द का अनुवाद ''पर गर्व करता हूं'' (''घमण्ड करता हूं''; वे माऊथ)। कुछ हद तक हमें ''गर्व करना'' दिखाना आवश्यक होता है जिससे हम उन लोगों पर जिनसे हम मिलते हैं सही प्रभाव डाल सकें। हमें अपने काम में ''गर्व करना'' आवश्यक है और अपनी पूरी कोशिश करना भी। निश्चित रूप से जो दूसरों ने प्राप्त किया है उस पर गर्व करने में कोई बुराई नहीं है (देखें 2 कुरिन्थियों 1:14)। पौलुस ने जिस घमण्ड/अहंकार/अभिमान को गलत कहा वह उन लोगों द्वारा दिखाया गया घमण्डपूर्ण व्यवहार है जिन्हें लगता है कि वे दूसरों से बेहतर हैं।[26] (ये अतिरिक्त विचार आपकी जानकारी के लिए हैं। उन्हें अपने पाठ या चर्चा में शामिल करने या न करने का निर्णय आपको ही लेना है।)

टिप्पणियां

[1]कइयों का विश्वास है कि पत्र लिखने का पौलुस का यह मुख्य कारण था। [2]विलियम बार्कले; रॉबर्ट जे. मोर्गन, *नेल्सन'स कम्पलीट बुक ऑफ़ स्टोरीज़, इलस्ट्रेशंस एण्ड कोट्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 2000), 633 में उद्धृत। [3]सी. एस. लेविस, *मियर क्रिश्चियनिटी* (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1952), 108-9. [4]NASB में विनाश से पहले घमण्ड होता है और ''ठोकर खाने से पहले अहंकारी मन'' है। [5]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''क्या परमेश्वर पापियों को त्याग देता है? (11:1-12)'' में आयत 11 पर चर्चा देखें। [6]11:25, 26 पर पाठ में जाने पर इसे याद रखें। [7]यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 15 में कोई क्रिया नहीं है, सो क्रियाएं अनुवादों द्वारा दी गई होंगी। कई लोग इस आयत को भविष्यसूचक भविष्यवाणी बनाने के लिए ''... होगा'' शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस भविष्य में यहूदियों के थोक पर मन परिवर्तन की भविष्यवाणी कर रहा हो। अनुवादकों ने ''होगा'' के बजाय ''है'' शब्द दिया होगा, यह हो सकता है। [8]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 411. मौरिस ने यह टिप्पणी जोड़ी: ''पौलुस के पास *ζωη εκ νεκρωτ* है, परन्तु अन्तिम पुनरुत्थान की बात *αναστασι νεκρον* के रूप में है (1 कुरिन्थियों 15:12 आदि)'' (n69)। [9]वाल्टर डब्ल्यू. वेस्सल, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. कैनथ बारकर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1723. [10]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ पॉल'स एपिस्टल टू रोमन्स,* न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1982), 370.

[11]इस पर और विस्तार से चर्चा 11:25, 26 के हमारे अध्ययन में की जाएगी। [12]''पेड़'' अनुवादकों द्वारा दिया गया है, परन्तु यह विचार ''डेला'' शब्द से मिलता है। [13]कुछ लेखक इसे ''दृष्टांत'' के रूप में कहते हैं जबकि अन्य ''रूपक'' शब्द को प्राथमिकता देते हैं। [14]प्रचीन लेखकों के अनुसार कई बार यह लगाए गए पेड़ को शक्तिशाली बनाने के लिए किया जाता था। [15]मौरिस, 414. [16]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुअल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 421. [17]रोमियों 12:3 में ''बढ़ाई'' के लिए 11:20 से अलग शब्द का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु मुख्यतया शिक्षा वही है। [18]लपटों में हाथ डालने से अपने आपको दूर रखने के लिए हमारे अन्दर आग का मज़बूत और स्वस्थ भय होना आवश्यक है। परन्तु इतना मज़बूत डर होना अच्छा नहीं है कि हम आग के पास जाने से इनकार करें (गतिहीन कर देने वाला डर)। [19]क्रूस से परमेश्वर की दयालुता (प्रेम) दिखाई गई जबकि परमेश्वर का क्रोध (न्याय) शांत हुआ। इस पर चर्चा ''तीन छोटे शब्द (3:24ख-26)'' पाठ में की गई थी। [20]वेस्सल, 1723.

[21]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 368. [22]प्रचार करने या सिखाने के समय मैं यहां जोड़ दूंगा, ''स्वागत की चट्टाई अभी भी बाहर थी।'' हमारे यहां कई घरों के बाहर दरवाज़े के पास चट्टाई होती है जिसका इस्तेमाल बाहर से आने वाले लोग घर में प्रवेश करने से पहले जूते साफ़ करने के लिए कर सकते हैं। इन में से कई चट्टाइयों पर ''स्वागत'' शब्द लिखा होता है। [23]हैंड्रिक्सन, 376. [24]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 2005 से लिया गया। [25]आइज़क वाटस, ''वैन आई सर्वे द वंडर्स क्रोस,'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. एण्ड संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [26]एनकाटा® वर्ड इंग्लिश डिक्शनरी माइक्रोसॉफ्ट वर्ड वर्ज़न 10, माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन, रेडमॉण्ड वाशिंगटन, 1999 से लिया गया।